

ब्यूज टुडे

प्रधानमंत्री ने पीएम-सेतु/ PM-SETU (प्रधानमंत्री स्किलिंग एंड एम्प्लॉयबिलिटी ट्रांसफॉर्मेशन थ्रु अपग्रेडेड ITIs) को लॉन्च किया

इस योजना को कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय के अधीन लागू किया जाएगा।
पीएम-सेतु योजना के बारे में

- ▶ प्रकार: 60,000 करोड़ रुपए की केंद्र प्रायोजित योजना।
- ▶ उद्देश्य: देश भर में 1,000 सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं को आधुनिक व उद्योग के अनुकूल प्रशिक्षण संस्थाओं में रूपांतरित करना।
- ▶ कार्यान्वयन: पीएम-सेतु योजना को हब-एंड-स्पोक मॉडल द्वारा लागू किया जाएगा। इसमें 200 हब ITIs को 800 स्पोक ITIs से जोड़ा जाएगा।
 - ⊕ इसमें प्रत्येक हब उन्नत अवसंरचना, नवाचार व इन्क्यूबेशन सेंटर्स, उत्पादन इकाइयों, प्रशिक्षक हेतु प्रशिक्षण सुविधाओं और प्लेसमेंट सेवाओं से लैस होगा। साथ ही, स्पोक ITIs इन सुविधाओं एवं सेवाओं की पहुंच और उनका अधिक से अधिक विस्तार सुनिश्चित करेंगे।
- ▶ इस योजना के मुख्य घटक:
 - ⊕ उद्योगों के साथ मिलकर नए व मांग-आधारित पाठ्यक्रम शुरू करना और मौजूदा पाठ्यक्रमों में आवश्यक सुधार करना;
 - ⊕ क्लस्टर का प्रबंधन करने और परिणाम-आधारित प्रशिक्षण सुनिश्चित करने के लिए विश्वसनीय एंकर उद्योग भागीदारों के साथ स्पेशल पर्पस व्हीकल्स (SPVs) स्थापित करना;
 - एंकर उद्योग भागीदारों का अर्थ है वे बड़े और प्रमुख उद्योग या कंपनियां जो किसी परियोजना या योजना के लिए मुख्य भागीदार के रूप में कार्य करती हैं।
 - ⊕ दीर्घकालिक डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम और एगजीक्यूटिव प्रोग्राम्स के लिए मार्ग खोलना;
 - ⊕ निम्नलिखित 5 राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थानों को मजबूत करना:
 - भुवनेश्वर (ओडिशा), चेन्नई (तमिलनाडु), हैदराबाद (तेलंगाना), कानपुर (उत्तर प्रदेश) और लुधियाना (पंजाब)।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं (ITIs) के बारे में

- ▶ संरचना: राज्य सरकारों के अधीन संचालित ITIs 1950 के दशक से भारत में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (VET) की बुनियाद रहे हैं।
- ▶ ITIs का प्रत्यायन: यह प्राधिकार कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण (VET) के शीर्ष संगठन प्रशिक्षण महानिदेशालय (DGT) को सौंपा गया है।
- ▶ ITIs की स्थिति: वर्तमान में लगभग 15,034 ITIs हैं, जिनमें से 78% निजी स्वामित्व वाली हैं।
- ▶ योजनाएं: इसमें औद्योगिक मूल्य संवर्धन के लिए कौशल सुदृढीकरण (STRIVE), मॉडल ITI, पूर्वोत्तर राज्यों में कौशल विकास अवसंरचना को बढ़ाना (ESDI) आदि शामिल हैं।

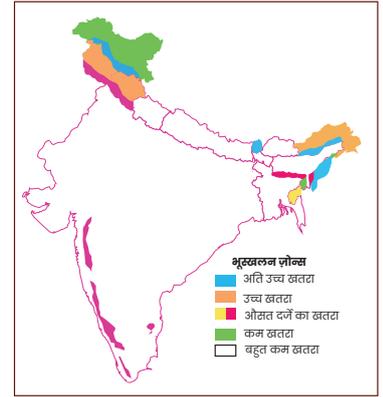
पूर्वी हिमालयी क्षेत्र में भूस्खलन की व्यापक घटनाएं दर्ज की गईं

हाल ही में, पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग और कलिम्पोंग जिलों में भारी बारिश के कारण कई जगह भूस्खलन की घटनाएं दर्ज की गईं।
भूस्खलन क्या है?

- ▶ परिभाषा: भूस्खलन गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में भारी माला में चट्टान, मिट्टी या मलबे जैसी सामग्री का ढलान से नीचे की ओर खिसकना या गिरना है।
- ▶ भूस्खलन के प्रति भारत की सुभेद्यता: इसरो के 2023 के 'लैंडस्लाइड एटलस ऑफ इंडिया' के अनुसार, भारत का 12.6% भूभाग भूस्खलन के खतरे के प्रति सुभेद्य है।
 - ⊕ इसमें से तीन-चौथाई से अधिक हिस्सा अकेले हिमालयी क्षेत्र में स्थित है।

हिमालयी क्षेत्र भूस्खलन के प्रति अधिक सुभेद्य क्यों है?

- ▶ प्राकृतिक कारण:
 - ⊕ विवर्तनिकी और भूविज्ञान: हिमालय एक युवा वलित पर्वत है। इसकी उत्पत्ति भारतीय और यूरेशियन प्लेट्स के टकराने की वजह से हुई है। इसमें भ्रंश एवं दरारें हैं, जो इस क्षेत्र को स्वाभाविक रूप से अस्थिर बनाते हैं।
 - ⊕ वर्षा और चरम मौसमी घटनाएं: मानसूनी वर्षा के साथ-साथ बादल फटने तथा बर्फ पिघलने से मृदा संतृप्त हो जाती है। इससे ढलानों की स्थिरता कम हो जाती है।
 - जलवायु परिवर्तन ने चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति को और बढ़ा दिया है।
 - ⊕ अन्य: भूकंपीय गतिविधि, खड़ी ढलानें, खराब जल निकासी और अचानक बाढ़ आदि मिलकर इस अस्थिरता को बढ़ाते हैं।
- ▶ मानवजनित कारण:
 - ⊕ अव्यवस्थित निर्माण: सड़कों की कटाई, सुरंग निर्माण आदि ढलानों को कमजोर करते हैं।
 - ⊕ अन्य: खनन, शहरीकरण से होने वाले भूमि-उपयोग परिवर्तन, वनों की कटाई व वन भूमि का अतिक्रमण आदि प्राकृतिक जल निकासी को बाधित करते हैं।



राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) द्वारा भूस्खलन प्रबंधन संबंधी दिशा-निर्देश

- ▶ सुभेद्यता और जोखिम आकलन: भूस्खलन और हिमस्खलन के प्रति सुभेद्य क्षेत्रों की पहचान एवं मानचित्रण करना जरूरी है।
- ▶ बहु-जोखिम संकल्पना: विभिन्न स्तरों पर बहु-विपदा जोखिम आकलन तथा शमन और प्रतिक्रिया रणनीतियों में भूस्खलन संबंधी चिंताओं को भी शामिल किया जाना चाहिए।
- ▶ अर्ली वार्निंग: उच्च जोखिम वाले भूस्खलनों के लिए रियल टाइम निगरानी और अर्ली वार्निंग प्रणालियां स्थापित करना आवश्यक है।
- ▶ आपातकालीन तैयारी और प्रतिक्रिया: इसमें वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, स्थानीय अधिकारियों, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF) और अर्धसैनिक बलों को शामिल करना है।
- ▶ अन्य: क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण; जन जागरूकता एवं शिक्षा; आपदा ज्ञान नेटवर्क; भूस्खलन जोखिम प्रबंधन के लिए एक वैधानिक ढांचा आदि।

ऊंटों पर ड्राफ्ट पॉलिसी पेपर में 'राष्ट्रीय ऊंट संधारणीयता पहल (NCSI)' का प्रस्ताव किया गया

यह ड्राफ्ट पॉलिसी पेपर खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के परामर्श से मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने तैयार किया है।

ड्राफ्ट पॉलिसी पेपर के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

➤ 1970 के दशक से अब तक भारत में ऊंटों की संख्या में 75% से अधिक की गिरावट आई है।

➤ ऊंटों की संख्या में गिरावट के कारण: इनमें-

- ⊕ पारंपरिक रूप से चली आ रही उनकी आर्थिक उपयोगिता में कमी;
- ⊕ चरागाह भूमि की हानि;
- ⊕ पर्यावरणीय दबाव (मरुस्थलीकरण, आक्रामक प्रजातियां, लंबे समय तक सूखा पड़ना आदि);
- ⊕ प्रतिबंधात्मक कानूनी फ्रेमवर्क;
- ⊕ ऊंट आधारित उत्पादों के लिए अविकसित बाजार आदि शामिल हैं।

➤ रणनीतिक सिफारिशें: इनमें-

- ⊕ राष्ट्रीय ऊंट संधारणीयता पहल (NCSI) शुरू करना;
- ⊕ चराई के लिए चरागाह भूमि को सुरक्षित करना;
- ⊕ ऊंट आधारित डेयरी संबंधी मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करना;
- ⊕ ऊंट आधारित पर्यटन को पुनर्जीवित करना;
- ⊕ पशु चिकित्सा और आनुवंशिक संरक्षण कार्यक्रम शुरू करना आदि शामिल हैं।

भारत में ऊंटों की प्रमुख नस्लें

- बीकानेरी, जैसलमेरी, मेवाड़ी (राजस्थान) और कच्छी व खराई (गुजरात) जैसे एक कूबड़ वाले ऊंट।
- ⊕ बीकानेरी (राजस्थान): इसे इसके बल और सहनशक्ति के लिए जाना जाता है। इसका आमतौर पर गाड़ी खींचने और भारी काम के लिए उपयोग किया जाता है।
- ⊕ जैसलमेरी (राजस्थान): इसे सहनशक्ति और अपनी तेज रफ्तार के लिए जाना जाता है। यह लंबी और पतली नस्ल, विशेष रूप से थार रेगिस्तान में ऊंट सफारी के लिए उपयोग की जाती है।
- ⊕ मेवाड़ी (राजस्थान): इसे दुग्ध उत्पादन के लिए जाना जाता है।
- ⊕ कच्छी (गुजरात): यह भार ढोने वाली नस्ल है, जिसका उपयोग आमतौर पर कच्छ के रण में जुताई और गाड़ी चलाने के लिए किया जाता है।
- ⊕ खराई (गुजरात): यह तटीय और मैंग्रोव पारिस्थितिकी-तंत्र के अनुकूल और एक उत्कृष्ट तैराक प्रजाति है।
- दो कूबड़ वाला बैक्ट्रियन ऊंट: भारत में ये विशेष रूप से लद्दाख के अधिक ऊंचाई वाले शीत मरुस्थल में पाए जाते हैं।

ऊंट के बारे में

➤ इसे "रेगिस्तान का जहाज" भी कहा जाता है। ऊंट शुष्क भूमि संबंधी पारिस्थितिकी-तंत्र के लिए असाधारण रूप से अनुकूल होते हैं। ऊंट पालन मुख्य रूप से (90%) राजस्थान और गुजरात में किया जाता है।

⊕ ऊंट पालन से जुड़े पशुपालक समुदायों में रायका, रबारी, फकीरानी जाट और मांगणियार समुदाय शामिल हैं।

➤ इनकी विशेषताएं: ये बिना पानी पिंप कई दिन तक जीवित रह सकते हैं; ये लम्बी दूरी तक जा सकते हैं; ये कांटेदार रेगिस्तानी पौधों को खा सकते हैं आदि।

⊕ ऊंटों के कूबड़ में वसा का भंडार होता है, जो उन्हें भोजन की कमी होने पर ऊर्जा प्रदान करती है। साथ ही, ऊंट अपने कूबड़ में नहीं बल्कि रक्त कोशिकाओं में पानी जमा करते हैं।

➤ ऊंटों की भूमिका:

⊕ पारिस्थितिक भूमिका: इनके द्वारा पानी की कम खपत; चरने संबंधी चयनात्मक व्यवहार; और मुलायम पैर वनस्पति विविधता को बनाए रखने तथा मरुस्थलीकरण को रोकने में मदद करते हैं।

• ऊंट का गोबर शुष्क क्षेत्रों में मिट्टी को समृद्ध बनाता है।

देश के पहले सहकारी 'मल्टी-फीड कंप्रेस्ड बायोगैस (CBG) संयंत्र' का महाराष्ट्र में उद्घाटन किया गया

यह परियोजना राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC) की सहायता से विकसित की गई है। यह संयंत्र प्रतिदिन 12 टन CBG का उत्पादन करेगा और गुड़ व शीरे से 75 टन पोटाश का उत्पादन करेगा।

➤ NCDC की स्थापना 1963 में की गई थी। यह सहकारिता मंत्रालय के तहत एक सांविधिक संगठन है। इसका उद्देश्य किसान सहकारी समितियों का विकास करना है।

कंप्रेस्ड बायोगैस (CBG) के बारे में

➤ CBG को कच्ची बायोगैस से तैयार किया जाता है। इसका संपीडित प्राकृतिक गैस (CNG) के समान एक स्वच्छ और नवीकरणीय ईंधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

⊕ कच्ची बायोगैस बायोमास और अपशिष्ट स्रोतों, जैसे- कृषि अवशेष, पशु गोबर, खाद्य अपशिष्ट आदि के अवायवीय (anaerobic) अपघटन द्वारा तैयार की जाती है।

⊕ बायोगैस में मुख्य रूप से निम्नलिखित शामिल हैं:

- मीथेन (CH₄): 55-60%;
- कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂): 35-40%;
- अन्य अशुद्धियां: H₂S, जलवाष्प आदि।

➤ हाइड्रोजन सल्फाइड (H₂S), CO₂ और जल वाष्प को हटाने के लिए कच्ची बायोगैस को शुद्ध किया जाता है। इससे मीथेन की सांद्रता 90% से अधिक हो जाती है। इसके बाद CBG प्राप्त करने के लिए इसे लगभग 200-250 बार के दबाव पर संपीडित (कंप्रेस्ड) किया जाता है।

CBG को बढ़ावा देने के लिए पहलें

- राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति 2018: यह CBG सहित उन्नत जैव ईंधनों को बढ़ावा देने पर बल देती है।
- गोबर-धन (GOBAR-DHAN) योजना: इसका उद्देश्य पशुओं के गोबर एवं खेतों के ठोस अपशिष्ट को बायो-CBG और कम्पोस्ट में परिवर्तित करना है।
- कृषिपरिवहन के लिए संधारणीय विकल्प (SATAT/ सतत) पहल: इसका उद्देश्य CBG के उत्पादन के लिए CBG संयंत्रों की स्थापना करना है।

CBG का महत्त्व

➤ ऊर्जा सुरक्षा: यह प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल के आयात को कम करने में मददगार है। इससे विदेशी मुद्रा की बचत होती है और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

➤ जलवायु लक्ष्य: यह प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन को कम करके राष्ट्रीय जलवायु लक्ष्यों का समर्थन (उदाहरण: पंचामृत प्रतिबद्धताएं) करती है।

➤ अपशिष्ट प्रबंधन: यह अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देती है, जिससे स्वच्छ भारत मिशन में योगदान मिलता है।

➤ ग्रामीण अर्थव्यवस्था: यह किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करती है और ग्रामीण रोजगार के अवसर सृजित करती है।

खान मंत्रालय ने 'महत्वपूर्ण खनिज पुनर्चक्रण प्रोत्साहन योजना (CMRIS)' के लिए दिशा-निर्देश जारी किए

CMRIS वस्तुतः राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन का एक प्रमुख घटक है। इसका उद्देश्य देश में महत्वपूर्ण खनिज (क्रिटिकल मिनरल्स) हेतु पुनर्चक्रण क्षमता का विकास करना है।

महत्वपूर्ण खनिज पुनर्चक्रण प्रोत्साहन योजना (CMRIS) के बारे में

➤ यह योजना देश में महत्वपूर्ण खनिजों के पृथक्करण और निष्कर्षण के लिए पुनर्चक्रण क्षमता के विकास को प्रोत्साहित करेगी।

➤ इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

⊙ 270 किलो टन वार्षिक पुनर्चक्रण क्षमता का निर्माण करना;

⊙ 40 किलो टन महत्वपूर्ण खनिजों का उत्पादन करना; तथा

⊙ लगभग 8,000 करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित करना।

➤ प्रोत्साहन: पूंजीगत व्यय के लिए प्रतिपूर्ति के आधार पर और परिचालनात्मक व्यय हेतु एक सीमा तक वृद्धिशील बिक्री हासिल करने पर प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा।

➤ अवधि: 6 वित्त वर्ष, जो वित्त वर्ष 2025-26 से शुरू होंगे।

➤ पात्र फीडस्टॉक स्रोत: इनमें ई-अपशिष्ट, लिथियम-आयन बैटरी (LIB) स्क्रेप, तथा अन्य स्क्रेप पदार्थ शामिल हैं।

➤ लागू होना: यह नई इकाइयों में निवेश और क्षमता विस्तार/ मौजूदा इकाइयों के आधुनिकीकरण एवं विविधीकरण पर लागू होगी।

महत्वपूर्ण खनिजों के पुनर्चक्रण का महत्त्व

➤ आपूर्ति संबंधी सुनिश्चितता: इससे एक मूल्यवान द्वितीयक आपूर्ति स्रोत का निर्माण होगा, जो नई खदानों पर निर्भरता को कम करेगा। साथ ही, इससे खनिजों का आयात करने वाले देशों के लिए आपूर्ति संबंधी सुरक्षा में भी वृद्धि होगी।

➤ संधारणीयता: खनन द्वारा उत्पादित प्राथमिक सामग्रियों की तुलना में रिसाइकल्ड पुनर्जी ट्रांजिशन मटेरियल जैसे निकेल, कोबाल्ट और लिथियम से 80% कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन होता है।

राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन के बारे में

➤ नोडल मंत्रालय: खान मंत्रालय।

➤ अवधि: वित्त वर्ष 2024-25 से 2030-31 तक।

➤ उद्देश्य: घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति स्रोतों को सुरक्षित करना तथा खनिज की खोज, खनन, प्रसंस्करण, पुनर्चक्रण, अनुसंधान एवं विकास तथा मानव संसाधन विकास को कवर करने वाली खनिज मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करना।

➤ मुख्य लक्ष्य: इसमें 1,200 घरेलू महत्वपूर्ण खनिज अन्वेषण परियोजनाएं, पुनर्चक्रण संबंधी 400 किलो टन का लक्ष्य, सम्पूर्ण मूल्य श्रृंखला में 1,000 पेटेंट दाखिल करना, तीन उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना करना आदि शामिल है।



अन्य सुर्खियां

कोकण-25 सैन्य अभ्यास

भारत के पश्चिमी तट पर भारतीय नौसेना और यूनाइटेड किंगडम की रॉयल नेवी के बीच द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास कोकण-25 की शुरुआत हुई।

➤ यह दोनों देशों के बीच पहला संयुक्त सैन्य अभ्यास है, जिसमें यूनाइटेड किंगडम का कैरियर स्ट्राइक ग्रुप – HMS प्रिंस ऑफ़ वेल्स और भारत का एयरक्राफ्ट कैरियर INS विक्रान्त शामिल हुए हैं।



NATPOLREX-X

भारतीय तटरक्षक (ICG) बल ने नेशनल लेवल पॉल्यूशन रिस्पॉन्स एक्सरसाइज (NATPOLREX-X) का 10वां संस्करण शुरू किया।

➤ NATPOLREX दो वर्षों में एक बार आयोजित होने वाला प्रमुख अभ्यास है। इसका उद्देश्य भारत की राष्ट्रीय तैयारियों का मूल्यांकन और उनमें सुधार करना है, ताकि समुद्री तेल रिसाव की घटनाओं के मामले में प्रभावी कार्रवाई की जा सके।





वाणिज्यिक कोयला खनन

अरुणाचल प्रदेश के नामचिक-नामफुक कोयला ब्लॉक में पहला वाणिज्यिक कोयला खनन शुरू किया गया।



- उल्लेखनीय है कि 2018 से सरकार ने निजी क्षेत्र के लिए वाणिज्यिक कोयला खनन की अनुमति दे दी थी। इससे सरकारी स्वामित्व वाली कोल इंडिया लिमिटेड का एकाधिकार समाप्त हो गया।
- पहले, निजी क्षेत्र को केवल कैप्टिव उपयोग के लिए कोयला खनन की अनुमति थी।
- निजी क्षेत्र को वाणिज्यिक खनन की अनुमति देने का उद्देश्य कोयले के लिए पारदर्शी मूल्य निर्धारण को बढ़ावा देना और कोयले के लिए एक बाजार बनाना है। ऐसे में कई उत्पादकों के शामिल होने से प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलेगा।



कोसी नदी

कोसी नदी के उफान पर होने से बिहार और नेपाल में बाढ़ एवं भूस्खलन का खतरा बढ़ गया है।

कोसी (या कोशी) नदी के बारे में

- उद्गम: यह एक सीमा-पार नदी (अंतर्राष्ट्रीय नदी) है, जो तिब्बत (चीन) से निकलती है। यह तीन धाराओं सुन कोसी, अरुण कोसी और तमुर कोसी के संगम से बनती है।
- इसके बाद यह नेपाल और भारत से होकर बहती है।
- यह गंगा की प्रमुख सहायक नदियों में से एक है और बिहार में गंगा से मिलती है।
- इसे “बिहार का शोक” भी कहा जाता है, क्योंकि यह अक्सर यहां पर भारी बाढ़ और विनाश लेकर आती है।
- माउंट एवरेस्ट और कंचनजंगा कोसी नदी के जलग्रहण क्षेत्र में अवस्थित हैं।
- मुख्य सहायक नदियां: कमला और बागमती।



कोरल ट्रायंगल

फिलीपींस ने प्रवाल भित्तियों (रीफ) की जैव विविधता को संरक्षित करने के लिए एक कोरल लार्वा क्रायोबैंक शुरू किया है। इसका उद्देश्य प्रवाल के ‘बीजों’ को भविष्य में पुनर्स्थापन और अनुसंधान के लिए प्रीज करके रखना है।

- यह परियोजना एक बड़े क्षेत्रीय प्रयास का हिस्सा है, जिसके तहत कोरल ट्रायंगल क्षेत्र में क्रायोबैंकों का एक नेटवर्क बनाया जा रहा है।

कोरल ट्रायंगल (समुद्रों का अमेजन) के बारे में

- स्थान: यह लगभग 5.7 मिलियन वर्ग किलोमीटर का समुद्री क्षेत्र है, जो इंडोनेशिया, मलेशिया, पापुआ न्यू गिनी, फिलीपींस, सोलोमन द्वीप समूह और तिमोर-लेस्ते तक फैला हुआ है।
- यह दुनिया का सबसे समृद्ध समुद्री जैव विविधता वाला क्षेत्र है।
- इसमें दुनिया की 75% से अधिक प्रवाल प्रजातियां, सभी रीफ मछली प्रजातियों की एक-तिहाई प्रजातियां, और विस्तृत मैंग्रोव वन पाए जाते हैं।



मिग ला दर्रा

सीमा सड़क संगठन (BRO) के प्रोजेक्ट हिमांक के तहत मिग ला दर्रे पर दुनिया की सबसे ऊंची मोटरयान चालन सक्षम सड़क बनाई गई है। यह सड़क समुद्र तल से 19,400 फीट की ऊंचाई पर लद्दाख में स्थित है।

- यह सड़क लिकारू-मिग ला-फुकचे धुरी में एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो फुकचे एयरफील्ड को चीन के साथ लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (LAC) से जोड़ती है।
- मिग ला दर्रा लद्दाख के चांगथांग पठार पर स्थित है।

प्रोजेक्ट हिमांक के बारे में

- इस परियोजना को 1985 में लेह में लद्दाख क्षेत्र में सड़क संपर्क के विकास के लिए शुरू किया गया था।



सुर्खियों में रहे व्यक्तित्व



तिरुपर कुमारन (1904-1932) और सुब्रमण्य शिव (1884-1925)

प्रधान मंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी तिरुपर कुमारन और सुब्रमण्य शिव को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

तिरुपर कुमारन के बारे में

- जन्म: तमिलनाडु के इरोड के पास एक बुनकर परिवार में हुआ।
- स्थापना: देशबंधु यूथ एसोसिएशन।
- प्रेरणा स्रोत: महात्मा गांधी के अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन के विचारों से प्रेरित थे।
- मुख्य योगदान: उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई विरोध मार्चों में भाग लिया था और राष्ट्रीय ध्वज हाथ में लिए हुए ही शहीद हो गए थे।

सुब्रमण्य शिव के बारे में

- जन्म: डिंडीगुल (मदुरै), तमिलनाडु में।
- रचनाएं: रामानुज विजयम, माधव विजयम आदि।
- प्रमुख योगदान: महात्मा गांधी और वी.ओ.चिदंबरम पिल्लई से प्रेरित होकर असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था।

